दुख भंजनी साहिब



ੴ

दुख भंजनी साहिब

अर्थात्

रखिआ दे शबद

महातम

श्री गुरू नानक देव जी की बाणी प्राकृतिक दवाई है। किसी प्रकार का दुख, कलेश, मुकदमा अथवा बीमारी हो, चालीस दिन प्रातः काल इश्नान के पश्चात् इस गुटके का श्रद्धा पूर्वक पाठ स्वयं करने या किसी और से सुनने से निश्चय ही लाभ होगा। कारोबार व नौकरी में सफलता मिलेगी तथा घर में सुख शांति होगी। हमें पूर्ण विश्वास है।

— सोधक ज्ञानी कृपाल सिंह जी

भाई चतर सिंह एण्ड को।

पुस्तकां वाले (अमृतसर वाले)

1687, कूचा जट्ट मल, दरीबा कलां दिल्ली-6

दिल्ली फोन :2325 3601, 326 7871

E-mail : bcsc@rediffmail.com

दुख भंजनी साहिब

(१) गउड़ी महला ५ मांझ॥ [पन्ना २१८]

दुख भंजनु तेरा नामु जी
दुख भंजनु तेरा नामु॥
आठ पहर आराधीऐ
पूरन सतिगुर गिआनु॥१॥रहाउ॥
जितु घटि वसै पारब्रहमु
सोई सुहावा थाउ॥
जम कंकरु नेड़ि न आवई
रसना हरि गुण गाउ॥१॥
सेवा सुरति न जाणीआ
ना जापै आराधि॥
ओट तेरी जगजीवना

मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥
भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥
तती वाउ न लगई
सतिगुरि रखे आपि ॥३॥
गुरु नाराइणु दयु गुरु
गुरु सचा सिरजणहारु ॥
गुरि तुठै सभ किछु पाइआ
जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥

(२) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना १६१]

सूके हरे कीए खिन माहे ॥
अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥१॥
काटे कसट पूरे गुरदेव ॥
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव॥१॥ रहाउ॥
मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥

करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥२॥
दुख नाठे सुख आइ समाए ॥
ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥३॥
इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥
नानक ते जन सुफल फले ॥४॥

(३) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना १६१]

ताप गए पाई प्रभि सांति ॥
सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥
प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥
जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥
सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥
सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥२॥
सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥
आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥३॥

दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥
कहु नानक
जो हरि गुन गावै ॥४॥५६॥

(४) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना १६२]

जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥
नामु रतनु वसै मनि आइ ॥१॥
जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥
साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥
इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥
जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥२॥
साजनु मीतु सखा करि एकु ॥
हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥
रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥
गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥

(५) गउड़ी महला ५ ।। [पन्ना १६५]

कोटि बिघन हिरे खिन माहि ।।
हरि हरि कथा साध संगि सुनाहि ॥१॥
पीवत राम रसु अंम्रित गुण जासु ।।
जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥
सरब कलिआण सुख सहज निधान ।।
जा कै रिदै वसहि भगवान ।। २ ।।
अउखध मंत्र तंत सभि छारु ।।
करणैहारु रिदे महि धारु ।। ३ ।।
तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ।।
कहु नानक अटल इहु धरमु ॥४॥८०॥

(६) गउड़ी महला ५ ।। [पन्ना २००]

सांति भई गुर गोबिदि पाई ।।
ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥

राम नामु नित रसन बखान॥
बिनसे रोग भए कलिआन॥१॥
पारब्रहम गुण अगम बीचार॥
साधू संगमि है निसतार॥२॥
निरमल गुण गावहु नित नीत॥
गई बिआधि उबरे जन मीत॥३॥
मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई॥
नानक दास तेरी सरणाई॥४॥१०२॥

(७) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना २००]

नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव॥
भरम गए पूरन भई सेव॥१॥ रहाउ॥
सीतला ते रखिआ बिहारी॥
पारब्रहम प्रभ किरपा धारी॥१॥
नानक नामु जपै सो जीवै॥

साध संगि हरि अंम्रितु पीवै॥२॥

(८) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना २०१]

थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे॥
सतिगुरि तुमरे काज सवारे॥१॥रहाउ॥
दुसट दूत परमेसरि मारे॥
जन की पैज रखी करतारे॥१॥
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने॥
अंम्रित नाम महा रस पीने॥२॥
निरभउ होइ भजहु भगवान॥
साध संगति मिलि कीनो दानु॥३॥
सरणि परे प्रभ अंतरजामी॥
नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी॥४॥

(९) गउड़ी महला ५॥ [पन्ना २०५]

राखु पिता प्रभ मेरे॥

मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे॥१॥ रहाउ॥
पंच बिखादी एकु गरीबा
राखहु राखनहारे॥
खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि
आइओ सरनि तुहारे॥१॥
करि करि हारिओ अनिक
बहु भाती छोडहि कतहूं नाही॥
एक बात सुनि ताकी ओटा
साध संगि मिटि जाही॥२॥
करि किरपा संत मिले मोहि
तिन ते धीरजु पाइआ॥
संती मंतु दीओ मोहि निरभउ
गुर का सबदु कमाइआ॥३॥
जीति लए ओइ महा बिखादी

सहज सुहेली बाणी ॥
कहु नानक मनि भइआ परगासा
पाइआ पदु निरबाणी ॥४॥४॥

(१०) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०१]

सरब कलिआण कीए गुरदेव ॥
सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥
बिघनु न लागै जपि अलख अभेव॥१॥
धरति पुनीत भई गुन गाए॥
दुरतु गइआ
हरि नामु धिआए॥१॥ रहाउ॥
सभनी थांई रविआ आपि॥
आदि जुगादि जा का वड परतापु॥
गुर परसादि न होइ संतापु॥२॥
गुर के चरन लगे मनि मीठे॥

निरबिघन होइ सभ थांई वूठे॥
सभि सुख पाए सतिगुर तूठे॥३॥
पारब्रहम प्रभ भए रखवाले॥
जिथै किथै दीसहि नाले॥
नानक दास खसमि प्रतिपाले॥४॥

(११) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०६]

चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए॥
रोग गए सगले सुख पाए॥१॥
गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु॥
सफल जनमु जीवन परवानु॥१॥ रहाउ॥
अकथ कथा अंम्रित प्रभ बानी॥
कहु नानक जपि जीवे गिआनी॥२॥

(१२) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०६]

सांति पाई गुरि सतिगुरि पूरे॥

सुख उपजे बाजे अनहद तूरे॥१॥ रहाउ॥
ताप पाप संताप बिनासे॥
हरि सिमरत किलविख सभि नासे॥१॥
अनदु करहु मिलि सुंदर नारी॥
गुरि नानकि मेरी पैज सवारी॥२॥
(१३) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०६]
सगल अनंदु कीआ परमेसरि
अपणा बिरदु सम्ारिआ॥
साध जना होए किरपाला
बिगसे सभि परवारिआ॥१॥
कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ॥
वडी आरजा हरि गोबिंद की
सूख मंगल कलिआण बीचारिआ॥१॥ रहाउ॥
वण त्रिण त्रिभवण हरिआ होए

सगले जीअ साधारिआ॥
मन इछे नानक फल पाए
पूरन इछ पुजारिआ॥२॥५॥
(१४) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०७]
रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ॥
नीद पई सुख सहज
घरु आइआ॥१॥ रहाउ॥
रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई॥
अंम्रित नामु रिद माहि धिआई॥१॥
नानक गुर पूरे सरनाई॥
जिनि अपने नाम की
पैज रखाई॥२॥८॥२६॥
(१५) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८०७]
ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग॥

पारब्रहमि तू बखसिआ
संतन रस भोग॥ रहाउ॥
सरब सुखा तेरी मंडली
तेरा मनु तनु आरोग॥
गुन गावहु नित राम के
इह अवखद जोग॥१॥
आइ बसहु घर देस महि
इह भले संजोग॥
नानक प्रभ सुप्रसंन भए
लहि गए बिओग॥२॥१०॥२८॥

(१६) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८१४]

बंधन काटे आपि प्रभिँ होआ किरपाल॥
दीन दइआल प्रभ पारब्रहम
ता की नदरि निहाल॥१॥

गुरि पूरै किरपा करी
काटिआ दुखु रोगु॥
मनु तनु सीतलु सुखी भइआ
प्रभ धिआवन जोगु॥१॥रहाउ॥
अउखधु हरि का नामु है
जितु रोगु न विआपै॥
साध संगि मनि तनि हितै
फिरि दूखु न जापै॥२॥
हरि हरि हरि हरि जापीऐ
अंतरि लिव लाई॥
किलविख उतरहि सुधु होइ
साधू सरणाई॥३॥
सुनत जपत हरि नाम जसु
ता की दूरि बलाई॥

महा मंत्रु नानकु कथै
हरि के गुण गाई ॥४॥२३॥५३॥
(१७) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८१७]

हरि हरि हरि आराधीऐ
होईऐ आरोग॥
रामचंद की लसटिका
जिनि मारिआ रोगु॥१॥ रहाउ॥
गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु॥
साध संगति कै वारणै
मिलिआ संजोगु॥१॥
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ
बिनसै बिओगु॥
नानक प्रभ सरणागती
करण कारण जोगु॥२॥३४॥

(१८) रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५
१ ओंकार सतिगुर प्रसादि॥ [पन्ना ८१७]

अवरि उपाव सभि तिआगिआ
दारू नामु लइआ॥
ताप पाप सभि मिटे रोग
सीतल मनु भइआ॥१॥
गुरु पूरा आराधिआ
सगला दुखु गइआ॥
राखनहारै राखिआ
अपनी करि मइआ॥१॥रहाउ॥
बाह पकड़ि प्रभि काढिआ
कीना अपनइआ॥
सिमरि सिमरि मन तन सुखी
नानक निरभइआ॥२॥१॥६५॥

(१६) बिलावलु महला ५ ॥ [पन्ना ८१६]

रोगु मिटाइआ आपि प्रभि
उपजिआ सुखु सांति ॥
वड परतापु अचरज रूपु
हरि कीन्ी दाति ॥१॥
गुरि गोविंदि क्रिपा करी
राखिआ मेरा भाई ॥
हम तिस की सरणागती
जो सदा सहाई ॥१॥ रहाउ ॥
बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥
नानक जोरु गोविंद का
पूरन गुणतासि ॥२॥१३॥७७॥

(२०) बिलावलु महला ५ ॥ [पन्ना ८१६]

ताती वाउ न लगई

पारब्रहम सरणाई॥
चउगिरद हमारै राम कार
दुखु लगै न भाई॥१॥
सतिगुरु पूरा भेटिआ
जिनि बणत बणाई॥
राम नामु अउखधु दीआ
एका लिव लाई॥१॥ रहाउ॥
राखि लीए तिनि रखनहारि
सभ बिआधि मिटाई॥
कहु नानक किरपा भई
प्रभ भए सहाई॥२॥१५॥७६॥
(२१) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८१६]
अपणे बालक आपि रखिअनु
पारब्रहम गुरदेव॥

सुख सांति सहज आनद भए
पूरन भई सेव॥१॥रहाउ॥
भगत जना की बेनती
सुणी प्रभि आपि॥
रोग मिटाइ जीवालिअनु
जा का वड परतापु॥१॥
दोख हमारे बखसिअनु
अपणी कल धारी॥
मन बांछत फल दितिअनु
नानक बलिहारी॥२॥१६॥८०॥

(२२) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८२१]

तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि॥
सतिगुर अपने कउ बलि जाई
जिनि पैज रखी सारै संसारि॥१॥ रहाउ॥

करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो॥
प्रभि अंम्रित नामु महा रसु दीनो॥१॥
दास की लाज रखै मिहरवानु॥
गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु॥२॥
(२३) बिलावलु महला ५॥ [पन्ना ८२५]
ताप पाप ते राखे आप॥
सीतल भए गुरचरनी लागे
राम नाम हिरदे महि जाप॥१॥ रहाउ॥
करि किरपा हसत प्रभि दीने
जगत उधार नवखंड प्रताप॥
दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा
त्रिसन बुझी मन तन सचु ध्राप॥१॥
अनाथ को नाथु सरणि समरथा
सगल स्रिसटि को माई बापु॥

भगति वछल भै भंजन सुआमी
गुण गावत नानक आलाप॥ २॥

(२४) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६११]

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना
मन तन भए अरोगा॥
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा
प्रगटे भले संजोगा॥ १॥
प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ॥
गावहु सुणहु पड़हु नित भाई
गुर पूरै तू राखिआ॥ रहाउ॥
साचा साहिबु अमिति वडाई
भगति वछल दइआला॥
संता की पैज रखदा आइआ
आदि बिरदु प्रतिपाला॥ २॥

हरि अंम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु
सरब वेला मुखि पावहु॥
जरा मरा तापु सभु नाठा
गुण गोबिंद नित गावहु॥३॥
सुणी अरदासि सुआमी मेरै
सरब कला बणि आई॥
प्रगट भई सगले जुग अंतरि
गुर नानक की वडिआई॥४॥

(२५) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६१६]

सूख मंगल कलिआण सहज धुनि
प्रभ के चरण निहारिआ॥
राखनहारै राखिओ बारिकु
सतिगुरि तापु उतारिआ॥१॥
उबरे सतिगुर की सरणाई॥

जा की सेव न बिरथी जाई॥ रहाउ॥
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा
प्रभ अपुने भए दइआला॥
नानक बिघनु न लागै कोऊ
मेरा प्रभु होआ किरपाला॥२॥

(२६) सोरठि मः ५॥ [पन्ना ६१६]

गए कलेस रोग सभि नासे
प्रभि अपुनै किरपा धारी॥
आठ पहर आराधहु सुआमी
पूरन घाल हमारी॥१॥
हरि जीउ तू सुख संपति रासि॥
राखि लैहु भाई मेरे कउ
प्रभ आगै अरदासि॥ रहाउ॥
जो मागउ सोई सोई पावउ

अपने खसम भरोसा ॥
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ
मिटिओ सगल अंदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥

(२७) सोरठि महला ५ ॥ [पन्ना ६१६]

सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना
सगला दूखु मिटाइआ ॥
ताप रोग गए गुर बचनी
मन इछे फल पाइआ ॥ १ ॥
मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥
करण कारण समरथ सुआमी
पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥
अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु
गुर नानक भए दइआला ॥
जै जै कार भए जग भीतरि

होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥

(२८) सोरठि महला ५ ॥ [पन्ना ६२०]

दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे
सभु संसारु उबारिआ ॥
पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी
अपणा बिरदु समारिआ ॥ १ ॥
होई राजे राम की रखवाली ॥
सूख सहज आनद गुण गावहु
मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥
पतित उधारणु सतिगुरु मेरा
मोहि तिस का भरवासा ॥
बखसि लए सभि सचै साहिबि
सुणि नानक की अरदासा ॥२ ॥
१७ ॥४५ ॥

(२६) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२०]

बखसिआ पारब्रहम परमेसरि
सगले रोग बिदारे॥
गुर पूरे की सरणी उबरे
कारज सगल सवारे॥१॥
हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि॥
तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै
अपणी किरपा धारि॥रहाउ॥
सदा अनंद करह मेरे पिआरे
हरि गोविदु गुरि राखिआ॥
वडी वडिआई नानक करते की
साचु सबदु सति भाखिआ॥२॥

(३०) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२०]

भए क्रिपाल सुआमी मेरे

तितु साचै दरबारि॥
सतिगुरि तापु गवाइआ भाई
ठांढि पई संसारि॥
अपणे जीअ जंत आपे राखे
जमहि कीओ हटतारि॥१॥
हरि के चरण रिदै उरिधारि॥
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई
दुख किलबिख काटणहारु॥१॥ रहाउ॥
तिस की सरणी ऊबरै भाई
जिनि रचिआ सभु कोइ॥
करण कारण समरथु सो भाई
सचै सची सोइ॥
नानक प्रभू धिआईऐ भाई
मनु तनु सीतलु होइ॥२॥१६॥

(३१) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२०]

संतहु हरि हरि नामु धिआई॥
सुख सागर प्रभु विसरउ नाही
मन चिंदिअड़ा फलु पाई॥१॥ रहाउ॥
सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ
अपणी किरपा धारी॥
पारब्रहम प्रभ भए दइआला
दुखु मिटिआ सभ परवारी॥१॥
सरब निधान मंगल रस रूपा
हरि का नामु अधारो॥
नानक पति राखी परमेसरि
उधरिआ सभु संसारो॥२॥२०॥

(३२) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२०]

मेरा सतिगुरु रखवाला होआ॥

धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ
हरि गोविदु नवा निरोआ॥१॥ रहाउ॥
तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ
जन की लाज रखाई॥
साध संगति ते सभ फल पाए
सतिगुर कै बलि जांई॥१॥
हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे
हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ॥
अटल बचनु नानक गुर तेरा
सफल करु मसतकि धारिआ॥२॥

(३३) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२१]

जीअ जंत्र सभि तिस के कीए
सोई संत सहाई॥
अपुने सेवक की आपे राखै

पूरन भई बडाई॥१॥
पारब्रहमु पूरा मेरै नालि॥
गुरि पूरै पूरी सभ राखी
होए सरब दइआल॥१॥रहाउ॥
अनदिनु नानकु नामु धिआए
जीअ प्रान का दाता॥
अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै
जिउ बारिक पित माता॥२॥
(३४) सोरठि महला ५॥ [पन्ना ६२२]
ठाढि पाई करतारे॥
तापु छोडि गइआ परवारे॥
गुरि पूरै है राखी॥
सरणि सचे की ताकी॥१॥
परमेसरु आपि होआ रखवाला॥

सांति सहज सुख खिन महि उपजे
मनु होआ सदा सुखाला॥ रहाउ॥
हरि हरि नामु दीओ दारू॥
तिनि सगला रोगु बिदारू॥
अपणी किरपा धारी॥
तिनि सगली बात सवारी॥२॥
प्रभि अपना बिरदु समारिआ॥
हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ॥
गुर का सबदु भइओ साखी॥
तिनि सगली लाज राखी॥३॥
बोलाइआ बोली तेरा॥
तू साहिबु गुणी गहेरा॥
जपि नानक नामु सचु साखी॥
अपुने दास की पैज राखी॥४॥

— संपूर्ण — 6GP/12/02 G

ੴ

